विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 30/04/2021

तोयराशि सम्भवापि तृष्णां संवर्द्धयति ।
ईश्वरतां दधानाप्यशिव प्रकृतित्वमातनोति ।
बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति ।

अर्थ - (तोयराशि सम्भवापि) समुद्र से उत्पन्न हुई भी यह लक्ष्मी (तृष्णां संवर्द्धयति) प्यास को बढ़ाती है। (ईश्वरतां दधानाप्य-शिव प्रकृतित्वम् आतनोति) ईश्वरता व शिवत्व को धारण करती हुई भी अशिव स्वभाव का प्रसार करती है। (बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति) सैन्यादि शक्ति का संवर्द्धन करती हुई भी ~~अशिव स्वभाव~~ लघुता को देती है।

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." – Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Page No.: ______

टिप्पणी-

समुद्र से उत्पन्न हुई भी यह तृष्णा को बढ़ाती है-यह विरोध है। समाधान है-धन-लोलुपता को बढ़ाती है। ईश्वरता अर्थात् शिवत्व को धारण करती हुई भी शिव भिन्न स्वभाव का विस्तार करती है-यह विरोध है। परिहार है- जगत् पर प्रभुत्व स्थापित करती हुई भी परपीडन द्वारा अमंगल स्वभाव को ही फैलाती है। शक्ति को बढ़ाती हुई भी भारहीनता को देती है-यह विरोध है, क्योंकि शारीरिक बल की वृद्धि में शरीर का भार बढ़ता ही है। समाधान है- सैन्य आदि बल की वृद्धि करती हुई भी कार्पण्य को देती है। 'विरोधाभास'।

पदव्याख्या- तोयराशिसम्भवा = तोयानां राशिः तोयराशिः (ष० तत्पु०) तोयराशेः सम्भवा (सम् + भू + अप् + टाप्) (पं० तत्पु०)। संवर्द्धयति = सम् + वृध् + णिच् लट् प्र० पु० ए०। ईश्वरताम् = ईश्वरस्य भावः ईश्वरता (ईश्वर + तल्) ताम्।

दधाना = धा + शानच् + टाप् वि० (स्त्री०) प्र० ए०। अशिवप्रकृतित्वम् = शिवा चासौ प्रकृतिः च शिव-प्रकृतिः (क० धा०) शिवप्रकृतेः भावः शिवप्रकृतित्वम् न शिवप्रकृतित्वम् (नञ्)। आतनोति = आ + तन् + लट् प्र० पु० ए०। बलोपचयम् = बलस्य उपचयः बलोपचयः (ष० तत्पु०) तम्। उपचयः = उप + चि + अच्। आहरन्ती = आ + हृ + शतृ + ङीप् वि० (स्त्री०) प्र० पु० ए०। लघिमानम् = लघोर्भावः (लघु + इमनिच्) द्वि० ए०। आपादयति = आ + पद् + णिच् + लट् प्र० पु० ए०। इति।।

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." –Rabindranath Tagore

Scanned with CamScanner